इकाई 11 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और उनकी कविता

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 पृष्ठभूमि

11.3 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

11.3.1 जीवन परिचय

11.3.2 साहित्यिक रचनाएँ

11.4 'नवीन' साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

11.4.1 राष्ट्रीय चेतना

11.4.2 नवजागरण

11.5 सारांश

11.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से संबंधित इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के समय की विभिन्न परिस्थितियों के बारे में बता सकेंगी/सकेंगे;
- नवीन के जीवन एवं व्यक्तित्त्व का परिचय दे सकेंगी/सकेंगे;
- उनके साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना को स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे; तथा
- नवीन जी के काव्य की विशेषताओं का विश्लेषण प्रस्तुत कर सकेंगी/सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

छायावाद के कवियों ने प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक विषयों को लिया लेकिन उनकी रचनाओं का मुख्य स्वर पुर्नजागरण से ही जुड़ा रहा। प्रसाद, पंत, निराला एवं महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं से जहाँ हिंदी साहित्य को समृद्ध किया वहीं विभिन्न विषयों के माध्यम से सामाजिक चेतना को भी स्वर दिया। इसी युग के एक और रचनाकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं से तत्कालीन राजनीतिक चेतना को और आगे बढ़ाया। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' इस युग के ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने केवल साहित्यिक रचनाओं द्वारा ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय योगदान द्वारा चेतना जगाने का कार्य किया। इस इकाई में हम उनके साहित्यिक कार्य की जानकारी तो प्राप्त करेंगे ही साथ ही उनके सक्रिय राजनीतिक जीवन से भी परिचय प्राप्त करेंगे।

नवीन जी की पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बचपन कष्टों में गुजरा। संघर्षों में पल कर बड़े हुए कवि के जीवन में कई पड़ाव आए। साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ाव होने पर उनमें काफी परिवर्तन आया। बड़े–बड़े लेखकों का उन पर प्रभाव पड़ा। राष्ट्र में उस समय स्वतंत्रता आंदोलन का दौर था। कवि का विकल मन कब पीछे रहने वाला था। वे भी उस आंदोलन में कूद पड़े थे। इस इकाई में हम विस्तार से इन सब बातों पर विचार करेंगे। नवीन जी द्वारा काव्य रचना में समय–समय पर परिवर्तन आता गया। भक्ति से लेकर राष्ट्रीय भावना से युक्त रचनाओं के द्वारा कवि ने समाज एवं देश को जगाने का ही कार्य किया है। इस इकाई में हम उनकी रचनाओं को भी प्रस्तुत करेंगे। तो आइए सर्व प्रथम हम तत्कालीन पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करें।

11.2 पृष्ठभूमि

अंग्रेजों के आगमन से देश की राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थिति में परिवर्तन आया। एक ओर भारतीय जनता विदेशी शक्ति की गुलाम बन गई वहीं ईस्ट इण्डिया कंपनी की नीतियों से आर्थिक असमानता भी बढ़ने लगी। अंग्रेज सरकार हर प्रकार से भारतीयों का शोषण कर रही थी। तत्कालीन प्रबुद्ध भारतीयों के प्रयास से एक नयी प्रकार की हलचल शुरू हुई। यह हलचल जीवन के विभिन्न पक्षों से जुड़ी हुई थी। सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का उदय होने लगा। कांग्रेस के रूप में एक सशक्त राजनीतिक मंच से भारतीयों ने विदेशी शासन के खिलाफ आवाज बुलंद की। धीरे–धीरे यह राजनीतिक मंच संपूर्ण भारतीयों के लिए एक बहुत बड़ा अस्त्र बन गया। कई महान् नेताओं ने इस संगठन के द्वारा विभिन्न आंदोलन चलाए। इस प्रकार भारतीयों में राजनीतिक चेतना जागृत हो चुकी थी, दूसरी ओर राजाराममोहन राय तथा ईश्वर चंद्र विद्या सागर के कार्यों से समाज सुधार का दौर भी प्रारंभ हो गया था। ऐसे ही राजनीतिक एवं सामाजिक उथल–पुथल के माहौल में बालकृष्ण शर्मा का आविर्भाव होता है।

11.3 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

11.3.1 जीवन परिचय

बालकृष्ण शर्मा का जन्म 8 दिसम्बर 1897 ई. को तत्कालीन ग्वालियर राज्य के भ्याना नामक गाँव में हुआ था। इनके पूर्वज ग्वालियर के गोदा गाँव में रहते थे। परिवार वल्लभाचार्य के वैष्ण संप्रदाय में विश्वास रखता था। इनके पिता तेज मिजाज किंतु सरल हृदय के व्यक्ति थे। पिता के अंदर जो त्याग तथा प्रखर स्वाभिमान था वह बेटे में भी आ गया था। इनका बचपन गरीबी में बीता था। माता चक्की पीस कर तथा दूसरों के यहाँ कार्य करके घर चलाती थी।

बालकृष्ण जब आठ बरस के हुए तब उन्हें पढ़ने के लिए नाथद्वारा भेज दिया गया। वहाँ वे पढ़ाई के स्थान पर षरारत ही किया करते थे अतः वापिस बुलाकर षाजापुर के मिडिल स्कूल में दाखिल करा दिया गया। बालक नवीन में बचपन से नाटक आदि में हिस्सा लेने की लालसा थी। 1913 में जब वे मिडिल स्कूल में थे तभी 'मुद्राराक्षस' नाटक में वे चन्द्रगुप्त बने, इस प्रकार हमेशा मंच पर कार्य करते रहे। यही कारण था कि उनमें अभिनय तथा व्याख्यान देने के गुण का विकास हुआ। बाद के दिनों में राष्ट्रीय आंदोलन को सक्रिय सहयोग देते हुए वे अपने भाषणों से जनता में जागृति लाने का प्रयास करते रहे।

मिडिल स्कूल में पढ़ते समय उनकी मित्रता एक मराठी भाषी छात्र से हुई। उसका नाम सेतु था। इसके चरित्र से प्रभावित होकर 'नवीन' जी ने एक कहानी की रचना कर डाली। यह उनकी पहली कहानी थी। यह तत्कालीन 'सरस्वती' पत्रिका में छपी थी। अपने माता–पिता से उन्होंने भक्ति के गीत सीखे तथा ब्रजभाषा की कविताएँ भी याद की। धीरे–धीरे हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा के साहित्य से उनका लगाव बढ़ता गया। सीखने की ललक बचपन से ही थी। केवल एक क्षेत्र में नहीं बल्कि कई क्षेत्रों में। जैसे तैराकी, पहलवानी आदि में भी उन्होंने महारत हासिल की। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से उनमें साहित्यिक रुचि का विकास हुआ।

सन् 1916 ई. में लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन का उनके जीवन में विशेष स्थान रहा। इस अधिवेशन में वे कवि माखनलाल चतुर्वेदी के साथ गए थे। वहाँ उनकी मुलाकात गणेश शंकर विद्यार्थी तथा मैथिलीशरण गुप्त से भी हुई। अपने इस सौभाग्य का वर्णन उन्होंने 'चिंतन' स्मृति अंक में बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसी अधिवेशन में उन्होंने देश के महान् नेताओं का भाषण भी सुना। इनमें थे महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, मोतीलाल नेहरू, सरोजनी नायडू, ऐनी बेसेंट तथा जवाहरलाल नेहरू। गणेश शंकर विद्यार्थी ने नवीन जी को कानपुर के क्राईस्ट चर्च कॉलेज में भर्ती करा दिया। नवीन जी ने यहाँ से सन् 1917 में इंटरमीडियट की परीक्षा पास की थी।

देश में राजनीतिक आंदोलन का दौर चल रहा था ऐसे में भला बालकृष्ण कैसे चुप बैठ सकते थे। जब गांधी जी ने असहयोग 'आन्दोलन' की शुरूआत की तब नवीन जी भी उसमें कूद पड़े। देश के लिए उनका जीवन समर्पित रहा। उन दिनों वे कानपुर के एकमात्र छात्र नेता थे। उत्तर प्रदेश के राजनीतिक नेताओं में उनका नाम हमेशा स्मरणीय रहेगा। सन् 1952 से मृत्यु पर्यन्त अर्थात 29 अप्रैल 1960 ई. तक वे संसद सदस्य भी रहे।

11.3.2 साहित्यिक रचनाएँ

नवीन जी बचपन से ही साहित्य में रुचि रखते थे। लेखन का कार्य उन्होंने इन्दौर से शुरू किया किंतु 1917 में गणेश शंकर विद्यार्थी से मिलने के बाद उन्होंने व्यवस्थित ढंग से लेखन कार्य शुरू किया। वे तत्कालीन एक महत्वपूर्ण पत्र 'प्रताप' से जुड़ गए थे। वे इस पत्र के संपादक भी रहे। राष्ट्रीय काव्य धारा को प्रचारित करने वाली पत्रिका 'प्रभाग' का भी लगभग वर्षों तक संपादन भी किया। नवीन जी की प्रकाशित काव्य रचनाएँ इस प्रकार से हैं।

1) कुंकुम
2) रश्मिरेखा
3) अपलक
4) कवासि
5) विनोबास्तवन
6) उर्मिला
7) प्राणर्पण
8) हम विषपायी जनम के
9) अर्चणा के फूल
10) आधुनिक हिन्दी काव्य

11) आधुनिक काव्य संग्रह

12) आकाशवाणी काव्य–संगम (भाग–1)

13) आकाशवाणी काव्य–संगम (भाग–2)

14) कवि भारती

15) कविताएँ

16) कवियों की झाँकी

17) काव्य सरोवर

18) काव्य धारामा

19) गांधी अभिवादन

20) निकुंज

21) परिचय

22) पुष्कतरिणी

23) भारतीय कविता पार

24) मुंशी अभिनंदन ग्रंथ

25) राष्ट्रीय कविताएँ

26) राजधानी के कवि

27) रूपांबंश

28) साहित्य चयन

29) सौहार्द–सुमन

30) संकेत

31) हिन्दी के वर्तमान कवि और उनका काव्य

32) हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेमगीत

गद्य – हमारी संसद

बोध प्रश्न –1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें –

1. बालकृष्ण शर्मा का जन्म कहाँ और किस वर्ष हुआ था?

.....

.....

.....

2. नवीन जी में व्याख्यान देने के गुण का विकास किस कारण हुआ?

.....

.....

.....

3. नवीन जी ने कहानी लेखन का प्रारंभ किससे प्रभावित होकर किया?

.....

.....

.....

4. सन् 1916 को नवीन जी के जीवन में कौन सी महत्वपूर्ण घटना घटी ?

11.4 'नवीन' साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

नवीन जी की जीवनी को पढ़ते हुए आपने पाया कि उनका परिवार गरीब जरूर था लेकिन घर के लोगों को अध्ययन में रुचि थी। नवीन जी को बचपन से ही भक्ति संगीत सुनने को मिला था। उनकी कविताओं में गीतों की प्रधानता है। इसका मुख्य कारण था मालवा व ब्रजभाषा के लोकगीत। भक्त कवियों की भांति उनकी कविताओं में अनुप्रास और तुकबंदी मिलती है। नवीन जी अध्ययनशील व्यक्ति थे। स्वतंत्रता संग्राम में जेल में रहने की अवधि में उनका अधिकांश समय अध्ययन में बीतता था। भक्त कवियों से लेकर आधुनिक गद्य की रचनाओं का, इन्होंने गहराई से अध्ययन किया था। कबीर ग्रंथावली, गालिब, पदमाकर, जैसे रचनाकारों का अध्ययन मनन किया था।

पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से गोखले, तिलक, गांधी, विनोबा, लाला लाजपतराय के लेखों को वे नियमित रूप से पढ़ते। बांगला में रवींद्रनाथ के साहित्य का अध्ययन किया था तो अंग्रेजी के शैली क्रीट्स, बर्डवस्थ, आस्क से लेकर बर्नार्डशा की रचनाओं का भी अध्ययन किया। मराठी भाषा के खाडेंकर और साने गुरू जी के उपन्यास तथा बांगला के बंकिम चंद्र के उपन्यासों का अध्ययन किया।

इस प्रकार अध्ययन के द्वारा उन्होंने ज्ञान ही नहीं अर्जन किया बल्कि अपनी काव्य प्रतिभा में उसका इस्तेमाल किया। अब हम उनकी आरंभिक काव्य रचनाओं के बारे में पढ़ेंगे। जैसा कि आपने पढ़ा कि उन्होंने भक्त कवियों की रचनाओं का गहराई से अध्ययन किया था। अतः उनकी प्रारंभिक रचनाओं पर भक्त कवियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कबीर के फक्कड़पन का प्रभाव नवीन के निम्न पद में स्पष्ट दिखता है–

डोला लिए चलो तुम झटपट, छोड़ें अटपट चालें
सजन भवन पहुँचा दो हमको, मन का हाल–बिहाल रे

विद्यापति की तरह नवीन जी लिखते हैं

आज सुना है, सखी, हमारे साजन लेंगे जोग री।
हमें दान में दे जायेंगे वे विकराल वियोग री।

गुरूनानक के पद की छाप नवीन जी की निम्न कविता में देखिए–

अगणिता तव दीपमाला में
क्या जगाई है तुम्हीं ने
सजन झिलमिल दीपमाला
इस महत् ब्रह्मांड भर में
खूब फैला है उजाला।

'नवीन' दोहावली में हम देख सकते हैं कि उनके दोहों पर रीतिकालीन कवियों का भी प्रभाव है। एक दोहा देखिए–

अमिय, हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार
जियत मरत झुकि–झुकि परत जेहिं चितवन इक बार।

मानवीय पीड़ा को नवीन जी ने जाना था समझा था। इसलिए उनकी कविता में एक संदेश रहता है जो भूले भटके को राह दिखाना चाहता है –

मानव के हिय में रहेगा द्वेष जब तक
जब तक रक्त के पिपासा रही आएगी,
जब तक अन्तर में दुबका रहेगा पशु
जब तक शोषित की धार बही जायगी,
जब तक मानव न होगा निज शुद्ध रूप,
जब तक भावना निर्वेद नहीं पायेगी।
तब तक गणेश शंकर की अतीत गाथा।
जनगण हिताय सत्ता कही जाएगी।

आत्मापर्ण के चतुर्थ आहुति से उदृत इस कवितांश में आपने देखा कि कवि एक ऐसे समाज की कल्पना करता है जिसमें आपसी भाई चारा हो।

11.4.1 राष्ट्रीय चेतना

पृष्ठभूमि का अध्ययन करते समय आपने यह तो जान ही लिया है कि 'नवीन' जी का राष्ट्रीय आंदोलन से किस प्रकार जुड़ाव हुआ। तत्कालीन समय देश में उथल–पुथल का था। यह उथल–पुथल जहाँ विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए था वहीं सामाजिक परिवर्तन के लिए भी था। नवीन जी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक जीवन से जुड़े हुए थे। उस समय के प्रमुख नेताओं में उनकी गिनती होती थी। जहाँ अन्य लोग केवल राजनीतिक नेता थे वहाँ नवीन जी एक सहृदय रचनाकार भी थे। उनकी लेखनी राष्ट्रीय आंदोलन के लिए चल रही थी। भारतीय जनगणना में देश भक्ति के लिए उन्होंने 'विप्लव गायन' किया। 'प्रलयकर' काव्य संग्रह तो इसी जोश को बढ़ाने के लिए समर्पित है। सन् 1920 में असहयोग आंदोलन चल रहा था कि अचानक चोरी–चौरा काण्ड हो गया। गांधी जी इस काण्ड से दुखी हो गए और उन्होंने आंदोलन को स्थगित कर दिया। इस घटना का नवीन जी पर गहरा असर हुआ। उन्होंने 'पराजय–गीत' की रचना कर डाली। दो पंक्तियां देखिए –

आज खड्ग की धार कुंठित है खाली तुणीर हुआ।
विजय पताका झुकी हुई है, हृदय भ्रष्ट यह तीर हुआ।

किंतु कवि अपनी इस निराशा से निकल आता है। वह पुनः नवजागरण का गान गाने लगता है।

कवि कुछ ऐसी तान सुना दे जिससे उथल–पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि–त्राहि स्तर नभ में छाए
नाश और सत्यानाशों का धुआँधर जग में छा जाए।

कवि के अंदर कई प्रकार की भावनाएँ उठ रही हैं किंतु वह राष्ट्रीय मुक्ति की कल्पना से जुड़ी हुई हैं।

मत कहो कि है निपट पराजयवादी मय विश्वास
मत कहो नैराश्यवादमय है मेरे विश्वास
तुम आलोचक गण, कला जानो विजय पराजयवाद
मैं यथार्थवादी कर्मठ हूँ फिर भो आज उदास

विदेशी शासन से कवि इतना खफ़ा है कि वह इसे समाप्त करने के लिए कठोर से कठोर कदम उठाने के लिए लोगों का आह्वान करता है। भारतीयों को उसके अंदर की शक्ति को ललकारते हुए कवि कहता है –

अन्दर आज छिपी है इसे भड़क उठने दो एक बार अब
दहल जाए दिल, पैर खड़खड़ाये, कांप जाए कलेजा उनका,
नाश स्वयं कह उठे कड़ककर उस गंभीर कर्कश के स्वर से
बरसों के साथिन हूँ तोड़ोगे क्या तुम अपने इस कर से?
ज्वालामुखी षान्त हैं इसे कड़क उठने दो एक बार अब
सिर चक्कर खाने लग जाए टूटे बंधन शासन गुण का
रूद्र गीत की कूद तान निकली है तेरे अन्तर तर से

वास्तव में नवीन जी सच्चे देश भक्त थे। अध्ययनशील होने के कारण उन्हें अधिक ज्ञान प्राप्त होता गया। परिवार, समाज, राष्ट्र से ऊपर उठकर विश्व बन्धुत्व की भावना का निरंतर विकास होता गया। वे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोना चाहते थे। उनका सपना था –

एक धाम तुम, एक नाम तुम
एक बान तुम, एक प्राण हो तुम
एक राजमय, इक यदि–गतिमय
सर्व–उदय के गेय गान हे तुम
खेदोदक का अर्घ्य चढ़ाकर
करो प्रात का संध्या–वदन
भरत–खंड के तुम हे जन–गण!

नवीन जी की राष्ट्रीयता केवल यहीं तक नहीं थी कि अंग्रेज देश छोड़कर जाएँ और सुविधा संपन्न भारतीय राज सत्ता हथिया ले। उनकी राष्ट्रीयता जन–जन के उत्थान के लिए थी। वे वास्तव में उन सभी के विरोधी थे जो गरीब–मजदूर एवं जन सामान्य का शोषण करते हैं।

सन् 1945 में वे बरेली के कारागार में थे। यहीं उन्होंने 'ओ मजदूर किसान, उठो' नामक कविता लिखी। आइए इस कविता की कुछ पंक्तियों को देखें –

उठो–उठो ओ नंगों भूखों
ओ मजदूर किसान उठो,
हम गतिमय मानव समूह के
ओ प्रचण्ड अभिमान उठो।
आज मुक्ति के अरमानों ने
मिलकर यों ललकारा है ओ सब सोने वाले जागो,
गूंज रहा नक्कारा है।
कैसी रात ? कहाँ के सपने
यह न प्रात पधारा है। ऐसे हँसते से प्रभात का
तुम करने सम्मान उठो,
उठो, उठो ओ नगो भूखों,
ओ मजदूर किसान उठो, किसका साहस है कि रख सके
तुमको यों चिर बंधन में स्वयं मुक्ति ही नाच रही है
सदा तुम्हारे स्पंदन में तुममें विप्लव अंतहित है
जैसे ज्वाला चंदन में तर रहा है तुम्हें विश्व यह
ओ जग के बलवान, उठो उठो उठो ओ नंगों भूखों,
अरे मजदूर किसान, उठो।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' अनोखे व्यक्तित्त्व वाले तथा कर्मठ पुरुष थे। अपनी लेखनी से उन्होंने जहाँ विदेशी शासन के खिलाफ आवाज उठाने का साहस दिलाया वहीं संघर्ष के लिए शक्ति भी प्रदान की। तत्कालीन साप्ताहिक 'प्रताप' में 17 जनवरी 1921 को 'रायबरेली का हत्याकाण्ड' नामक लंबा लेख लिखा। इस लेख के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों द्वारा ढाए जा रहे जुल्मों का पर्दाफाश किया। अंग्रेज अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए किस प्रकार लोगों को गोली से भून डालते थे उसका वर्णन इस लेख में है। लेख का कुछ अंश प्रस्तुत है।

'मनुष्यता की कौन–सी भावना निर्दोशों और निहत्थों पर गोलियाँ चलाने की आज्ञा देती है? मनुष्यता की रक्षा करने में यदि इन हत्यारों को कोर्ट मार्शल की सजा भी भोगनी पड़ती तो उस समय छातियों पर लगने वाली गोलियाँ उनके माथे पर इस समय लगी हुई पशुता और हत्या के कलंक की कलिमा की अपेक्षा कहीं अधिक शोभाशालिनि होती। अपने देश के आदमियों की इस नपुंसकता से हमें उतना ही भयंकर संग्राम करना है, जितना कि सत्ताधिकारियों की सत्ता की रक्षा करने और जनता को भयभीत रखने वाली शक्तियों से। प्रत्येक देश भक्त का काम है कि वह जिस समय सत्ताधिकारियों की अट्टालिकाओं को हिलाने की कोशिश करे और जनता में निर्भयता और साहस, अधिकारों और कर्तव्यों की भावनाओं को जगाने, उसी समय अपने ही ऊपर प्रहार करने वाले कुल्हाड़ी के बेट बने हुए, इस प्रकार के अपने ही भाईयों की भ्रष्ट कर्तबुद्धि को भी जगावे। रायबरेली का हत्याकाण्ड, सदृश घटनाएँ क्रूरता और स्वार्थ का एक अत्यंत भयंकर दृश्य आंखों के सामने उपस्थित करती है। परन्तु इन हत्याकाण्डों में गिरने वाले निर्दोशों के रक्त पर आशा का एक संदेश

भी अंकित है और वह यह है कि उन निर्दोशों की रक्तांजलि अन्यायी और अत्याचारी की अंतिम कला की अंतिम झलक मात्र होती है। राष्ट्रीय आंदोलन का दौर चल रहा था। सन् 1919 तक आते–आते यह आंदोलन भंयकर रूप धारण कर चुका था। गांधी जी ने 'स्वराज्य या मृत्यु' का नारा दिया। इसी नाम से नवीन जी ने एक लेख लिखा उसका कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत है। किस प्रकार सत्ताधारी अंग्रेजो का ह्रदय कांपने लगा था तथा वे अपने डर को छुपाने के लिए अत्याचार का सहारा लेना चाहते थे। इसका यर्थाथ रूप इस लेख में देखने को मिलता है।

स्वराज्य या मृत्यु

हमारे राष्ट्रीय महाभारत के युद्ध–पर्व का प्रधान भाग शुरू हो गया। लगभग एक वर्ष से हमने भारतीय नौकरशाही से अहिंसात्मक धर्मयुद्ध की घोषणा कर दी थी। परन्तु अब तक हमारे रण–निमंत्रण को स्वीकार करने में नौकरशाही हिचकिचाती रही। अभी तक वह इधर–उधर बगलें झाँकती रही। कुछ दिन तो उसने हमारे रण–निमंत्रण का मजाक उड़ाया, परन्तु हमारी सत्यता से दंग होकर उसका पापी ह्रदय अब डर से काँपने लगा और उसने हमें अपने निश्चय से विचलित करने के लिए दमनास्त्र का प्रहार किया। हमारे ऊपर जाब्ता फौजदारी कानून और भारतीय दंड विधान के तरकशों से चुने हुए तीरों की वर्षा की गयी। कुछ समय के लिए दफा 144 व 108 का तूफान–सा आ गया और 124–ए तथा 153–ए का आश्रय लेकर राष्ट्रीय कार्यकर्ता जेल में ठूंसे जाने लगे। चौदह वर्ष की लड़कियों पर भी 144 धारा का प्रयोग किया गया और क्षय रोग से पीड़ित मरणासन्न बुड्ढे भी 108 के शिकार बने। सत्य बात कहना राजविद्रोह करार दिया गया। परन्तु जब ये पुराने और कन्द तीर साहस और दृढ़ता, त्याग और निर्भयता के कवचों से सुरक्षित अटल राष्ट्रीय सेना पर कुछ भी असर न कर सके तब अंत में हार मानकर नौकरशाही ने हमारा रण–निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

नवीन जी भारतीयों की नब्ज को पहचानते थे। वे जानते थे कि यहाँ के लोग संघर्ष तो करना जानते हैं लेकिन शीघ्र ही कुछ पा लेने की लालसा उनमें हमेशा रहती है। और इसी कारण वे इस ताक में भी रहते थे कि कब अंग्रेजी सरकार से समझौता हो और उन्हें कुछ मिल जाए। इस मनोवृत्ति को दूर करने के उद्देश्य से नवीन जी ने 'आखिर यह पंतगबाजी क्यों'? नाम से एक लेख लिखा। यह लेख दैनिक प्रताप में 19 मई सन् 1945 को छपा था। यहाँ कुछ आरंभिक अंश प्रस्तुत है।

आखिर यह पतंगबाजी क्यों ?

हम लोगों की एक विचित्र मनोवृत्ति बन गयी है। 'हम लोगों' का अर्थ है, वे हम भारतवासी, जो अपने को राजनैतिक चेतना से युक्त मानते हैं। विचित्र मनोवृत्ति हमारी यह है कि हम हर समय यह सोचते हैं कि वृक्ष से अब जामुन टपकने वाला है। अब वह हमारे मुँह में आने वाला है। जब कभी भी हम अपनी स्वाधीनता के लिए युद्ध प्रारंभ करते हैं तो उसके आरंभ होते न होते हम सोचने लगते हैं कि बस अब समझौता हुआ, तब समझौता हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए युद्ध करने वालों की जब ऐसी मनोवृत्ति हो जाए तो हम उसे विचित्र क्यों न कहें? और विचित्र ही क्यों, यह मनोवृत्ति तो एक दूशित, अवास्तविक, रोमांचवादी एवं कायरतापूर्ण मनोवृत्ति है। बात यह है कि एक बार जो हमने गांधी–इरविन समझौते की बहार देखी तो हमको हर बार समझौता ही समझौता दिखायी देने लगा। और वास्तविक बात तो यह है कि हममें स्वतंत्रता प्राप्ति की वह लगन, वह तपन, वह आग नहीं है जो हमें दृढ़तापूर्वक आजीवन जूझते रहने के लिए उत्क्रमणित करती रहे। हाँ, देश में कुछ लोग, यही

लाख दो लाख आदमी, ऐसे हैं जो बिचारे कांग्रेस के झण्डे के नीचे कुछ न कुछ प्रयत्न किया करते हैं। परन्तु उनमें भी यह मनोभावना पैठ गयी है, बस समझौता होगा। संतोष और दृढ़ता के साथ वास्तविक परिस्थिति को देखने और समझने की शक्ति जैसे हम खो बैठे हैं।

नवीन जी भारतीय जनता को समझाना चाहते थे कि संघर्ष से कभी घबराना नहीं चाहिए और न ही शीघ्र किसी फल की आशा रखनी चाहिए। अगर निश्चित उददेश्य के लिए संग्राम है तो उसे आगे बढ़ाते जाओ। क्योंकि अंत में विजय तुम्हारी ही होगी।

एक ओर राष्ट्रीय आंदोलन का अंतिम दौर चल रहा था तो दूसरी ओर एक भयंकर तूफान धर्म के नाम पर देश के बँटवारे का आने वाला था। अंग्रेजों ने अखिरकर यहाँ के निवासियों को दो टुकड़ो में बाँट ही दिया। धर्म के नाम पर देश के बँटवारे से तमाम बुद्धिजीवी हतप्रभ थे। अपने–अपने हृदय की पीड़ा को विभिन्न–विभिन्न माध्यमों से व्यक्त किया। बालकृष्ण जी तो इस बँटवारे से केवल दुःखी ही नहीं थे बल्कि उनकी आँखों में इस बँटवारे का भविष्य भी दिखाई दे रहा था। वर्ष बाद जब बंगलादेश बना तो आज ऐसा लगता है कि नवीन जी वास्तव में युग दृष्ट्रा थे। इस भविष्यदृष्टा ने 28 जून सन् 1947 को दैनिक 'प्रताप' में एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था– के बोले माँ! तुमि अबले?

इस लेख का यह अंश यहाँ प्रस्तुत है जिसमें आप स्वयं उनकी दूर दृष्टि का अंदाज लगा सकते हैं।

के बोले माँ ! तुमि अबले?

बंग–भंग हो गया। अब की बार बंग–भंग कर्जन ने नहीं किया। उसके अपराधी इस बार हम हैं। निस्संदेह, इस बंग–विभाजन के मूल में साम्राज्य–शाही की वह भेदकरी कर्जनीय नीति ही है जिसने हमें आज ये दिन दिखलाये। पर विभाजन का यह अपराध हमारे माथे है। ऐतिहासिक कारणों का कहाँ तक विवेचन किया जाय? जिनके सिर पर इस देश में मुसलमानों का इतना बलशाली बहुमत उत्पन्न करने का भार है, जिनकी सामाजिक रूढ़ियाँ और परंपराएँ इस गुत्थी को सुलझाने की उत्तरदायिनी हैं, वे इतिहास के पन्ने उल्टें भी तो उन्हें क्या संतोष प्राप्त हो सकता है? आज तो यथार्थता यह है कि बंकिम, रवि ठाकुर, खुदीरा, कन्हाईलाल, चित्तरंजन, सुभाष और नजरुल इस्लाम की बंग माता विक्षतअंगा हो गयी। वह कटी पड़ी। बाहु से तुमि, माँ, शक्ति हृदये तुमि, माँ भक्ति, तोमार प्रतिमा गड़ि मंदिरे–मदिरे!! आज हृदय हा–हाकार करके पूछ उठता है : बंकिम का वह स्वप्न क्या हुआ? के बोले माँ, तुमि अबले? गर्व एवं विश्वास का द्योतक यह प्रश्न–वाचक सिद्धांत वाक्य, आज जैसे इतिहास के पृष्ठों के भीतर से चीत्कार करता हुआ, हमारी विवशता पर आँसू बहाने को हमसे कह रहा है। बंगाल ही क्यों, आज समूचा भारतवर्ष छिन्न–विच्छिन्न हो रहा है, हो गया है। रवींद्र ठाकुर की वह सील–सिन्धु जल घोल चरण तल, अनिल विकपित श्यामल अंचल, अम्बर चुंबित भाल हिमाचल, शुभ तुषार किरीटिनी भुवन।

वास्तव में नवीन जी सच्चे मायने में राष्ट्रभक्त थे। उनकी राष्ट्रीयता केवल अंग्रेजों से मुक्ति की नहीं थी। बल्कि ऐसे राष्ट्र की स्थापना की थी जिसमें जनता में किसी प्रकार का भेदभाव न हो। देश का प्रत्येक निवासी आपसी भाइचारे से रहे। किंतु ऐसा नहीं होने वाला था। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र राष्ट्र बनने वाला था किंतु साथ ही धर्म के नाम पर देश का विभाजन भी हो चुका था ऐसी स्थिति में क्या राष्ट्र के निवासी शांतिपूर्वक प्रगति कर सकते थे। इसी आशंका को व्यक्त करते हुए नवीन जी ने यह लेख लिखा

एक स्थान पर बैठे हुए हम कुछ मित्रों से वार्तालाप कर रहे थे। एक मित्र कह उठे, शर्मा जी, 15 अगस्त 1947 का दिन आप अपने प्रांत में कैसे मनायेंगे? क्या कुछ दीवाली होगी? मध्य प्रांत तो उस दिन दीपमालाओं से अपने नगरों और ग्रामों को सजाने का निश्चय कर चुका है। आप भी कुछ क्यों नहीं करते? हमें भी अपनी प्रसन्नता का प्रदर्शन तो करना ही चाहिए। इन मित्र की बात सुनकर कुछ क्षण तो हम चुप हो गये और फिर उदासीन भाव से बोले कि ऐसी कौन–सी बड़ी बात हो गयी है जो उस दिन प्रसन्नता मनायें? हमें तो ऐसा लगता है कि उस दिन हमको कोई प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। शांत भाव से हमें अपनी स्वतंत्रता के आविर्भाव का स्वागत करना चाहिए। न जाने क्यों आज हृदय मर चुका है और शोणित रास की गति धीमी पड़ गयी है। इसका कारण है हमारी वह परिस्थिति, जिसमें से होकर हम अपना मार्ग क्रमण कर. रहे हैं। देश विभाजित हो गया है और इस विभाजन में भयंकर कटुता एवं पारस्परिक शत्रुता समाविष्ट हो गयी है। भविष्य अंधकारमय दिखायी पड़ रहा है। हिन्दू महासभा के अध्यक्ष श्रीयुत् भोपटकर महाशय के सदृश्य अनुत्तरदायी महानुभावों की विचार अभिव्यक्ति एक ओर है तो दूसरी ओर लीगी नेताओं की नितांत जड़तापूर्ण धर्माधंता की अनर्गल वार्ता है। आज हिन्दू समाज की राष्ट्रवादिता एवं समदर्शिता का संतुलन डावाँडोल हो गया है। आज मुसलमान समाज की बुद्धिशून्य निष्ठुरता फूट फैली है। भविष्य के आवरण से नाना प्रकार की आशंकाएँ अपना मुँह निकाल रही हैं। ऐसे समय हम क्या प्रसन्नता मनायें? जब देशवासियों की सद्भावना का दिवाला निकल गया हो तब क्या दिवाली, क्या उत्सव, क्या आनन्द?

निस्संदेह, भविष्य की आशंकाएँ आज सामने हैं। पाकिस्तान की स्थापना ने भी एशिया एवं यूरोप के मानचित्र में एक अभूतपूर्व परिवर्तन कर दिया है। आज बंगाल की खाड़ी से लेकर अटलांटक समुद्र तक मुसलमान राज्यों की एक श्रृंखला बन गयी है। पश्चिमी पंजाब, बलूचिस्तान, सिंध सीमाप्रांत, अफगानिस्तान, मध्य एशिया के सोवियत मुस्लिम प्रांत ईरान, तुर्की ट्रांसजोर्डान, ईराक, फिलस्तीन, मिस्र, ट्रिपोली, मोरक्को आदि राष्ट्रों की यह एक साम्प्रदायिक संस्था मुस्लिम लीग शिमला सम्मेलन को अकृतकार्य बनाना चाहती है। दूसरी साम्प्रदायिक संस्था हिन्दू महासभा भी अपने कार्यक्रम के द्वारा उस शिमला सम्मेलन को नष्ट–भ्रष्ट करना चाहती है। दोनों साम्प्रदायिक संस्थाओं के लक्ष्य की एक एकता में क्या कोई रहस्य छिपा हुआ है? कोई रहस्य हो चाहे न हो, परन्तु दोनों साम्प्रदायिक संस्थाओं, मुस्लिम लीग और हिन्दु महासभा, की इस समय जो आदर्श–एकता स्थापित हो गयी है, वह है बहुत ही विचित्र, अत्यंत आश्चर्यजनक, अथच चिन्तनीय। साम्प्रदायिक संस्थाओं में–फिर चाहे वे एक–दूसरे के कट्टर शत्रु ही क्यों न हों–इस प्रकार की उद्देश्य–एकता बहुधा स्थापित हो जाती है। इसका कारण मनोवैज्ञानिक है। सम्प्रदायिकतावादी तो साम्प्रदायिकता के क्षेत्र के भीतर ही विचरण करने का अभ्यासी होता है। अतः एक–दूसरे से प्रतिकूल दिशा में सोचते रहने वाले दो सम्प्रदायवादियों की विचारधारा एक ही प्रकार की प्रणालिका से बहती है। इस कारण, इस प्रकार की ध्येय–एकता दो परस्पर विरुद्ध साम्प्रदायिक संस्थाओं में स्थापित हो जाती है।

11.4.2 नवजागरण

आपने देखा नवीन जी बहु प्रतिभावान व्यक्ति थे। उनके अंदर जहाँ राष्ट्र प्रेम भरा था वहीं उससे भी बढ़कर उनके मन में मानवता का स्थान था। इसी मानवता की भावना के कारण वे जन–जन का कहलाना चाहते थे। जाति धर्म आदि भेद भावों से ऊपर उठकर मनुष्य को

प्रजाति का अवसर मिले इसके लिए उन्होंने प्रयत्न किया। 1915 में छपी इस कविता का अवलोकन कीजिए –

हे तारक राज तुम्हें शतवार प्रणाम हमारा
करते हो तुम दूर रात का अंधियारा
भर देते हो सुप्रकाश से जग सारा
है कितना विश्व पर उपकार तुम्हारा
तुम देते हो उपदेश शीघ्र उठने का
कर्त्तव्य भाव से आलस्य दूर करने का
सत्कार्य तेज से जीवन को भरने।

1935–36 की एक घटना से आप अनुमान लगा सकते है कि नवीन जी किस प्रकार मजदूरों के उत्थान के लिए कार्य करते रहे। कानपुर के सूती मिल में मजदूरों की 52 दिन की हड़ताल चली। इस समय नवीन जी ने जनता से मांग कर प्रतिदिन 25–26 हजार व्यक्तियों को खाना खिलाने का जिम्मा अपने ऊपर लिया था। इस समय उन्होंने सत्ता पक्ष पर प्रहार करते हुए यह कविता लिख डाली थी–

सुन लो गर तुममें हिम्मत है
नंगे भूखों का यह गाना,
अब तक के रोने वालों का
यह विकट तराना मस्ताना।
जिनको तुम क्रिड़ा समझते थे।
वे तो यारों निकले मानव
जो रेंगा करते थे अब तक
वे आज कर उठे हैं तांडव

मजदूरों की समस्या को नवीन जी ने विश्व समस्या के रूप में देखा। उनका मानना था कि पूंजीपति व्यवस्था के कारण मजदूरों की हालत दिन पे दिन खराब होती जा रही है। इधर कुछ चालाक लोग मजदूरों के नेता बन कर उन्हें भड़काते हैं। जरूरत इस बात की है कि मिल बैठ कर ठण्डे दिमाग से ऐसा कार्य करें कि उत्पादन न रुके और मजदूरों को भी उचित पारिश्रमिक मिले। मजदूर समस्या पर स्वयं नवीन जी के लेख का अंश पढ़ कर आप स्वयं जाँचे कि वे किस प्रकार का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

हमारी मजदूर समस्या और उसकी उलझनें

हमारे देश की नहीं, समस्त संसार की मजदूर समस्या आज उलझ–सी गयी है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, कनाडा, सभी जगह मजदूर वर्ग में एक विशेष असंतुष्टि, एक हृदय–मंथनकारी बेचैनी है। इस असंतोश का कारण बिल्कुल स्वाभाविक, अतः धैर्यपूर्वक विचार करने योग्य है। प्रत्येक महायुद्ध के उपरांत समाज में एक अद्‌भूत अभूतपूर्व आर्थिक असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। युद्ध के लिए समूचे राष्ट्र की शक्तियाँ लगती है। राष्ट्र का अमाप धन युद्ध में व्यय होता है। राष्ट्र के निवासियों से युद्ध के लिए उपयोगी सामग्रियों को बनाने का काम लिया जाता है। इस कार्य के लिए समाज एवं राष्ट्र द्वारा स्वीकृत आर्थिक विनिमय अर्थात् सिक्के का ही प्रयोग होता है। चूंकि व्यय बहुत अधिक होता है, अतः सिक्के

में निस्सीम वृद्धि होती है। परिणाम यह होता है कि एक ओर सिक्के का चलन बढ़ता है और दूसरी ओर जब जीवनोपयोगी वस्तुओं की वृद्धि उस मात्रा में नहीं होती जितनी मात्रा में सिक्कों की वृद्धि होती है, तब उन वस्तुओं का भाव बढ़ने लगता है और इस प्रकार समाज में खलबली उत्पन्न होती है। इस आर्थिक असंतुलन, अर्थात् आर्थिक–तराजू के पलड़ों के ऊँचे–नीचे हो जाने के कारण समाज में बेचैनी, असंतोष एवं उलझनों का जन्म होता है। विगत 1914–18 के महायुद्ध की समाप्ति के बाद भी इन्हीं आर्थिक कारणों से हम भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय आकाश में श्रमिक वर्ग के असंतोष का उल्कापात देख चुके हैं। तब 1939–45 के विश्वव्यापी महायुद्ध के उपरांत यदि हम संसार की श्रमिक–वर्गीय असंतुष्टि को देखें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

जहाँ तक हमारे मजदूर भाइयों का सम्बन्ध है, उनके बीच कुछ ऐसे लोगों का प्रवेश हो गया है जिनका एकमात्र उद्देश्य उन मजदूरों के रक्त को हमेशा बुखार की हालत में रखना है। उन्हें सदा उभारते रहना, उन्हें व्यर्थ के संघर्ष के लिए प्रेरित करना और इस प्रकार की बेचैनी पैदा करते रहना, इन तथाकथित मजदूर हितैषियों का राजनीतिक कार्यक्रम है। ये लोग इसी प्रकार शायद मजदूर–राज स्थापित करने का स्वप्न देख रहे है। किन्तु वास्तविकता यह है कि इस प्रकार किसान–मजदूर राज की जड़ें खोखली की जा रही है। मजदूरों को उल्लू बनाकर समाज में गड़बड़ी फैलाकर ही यदि स्वराज्य की स्थापना संभव होती तो लोगों ने जर्मनी में स्वराज्य बना दिया होता। पर उसके बजाय तथाकथित विश्व क्रांतिकारी हिटलर राज्य को स्थापित किया। इसी प्रकार स्पेन में इन्हीं लोगों ने, फ्रेंको के आक्रमण काल में आपस में फूट डाल कर तमाम वामपंथियों की शक्तियों को छिन्न–भिन्न करके, स्पेन की फाशिस्ट विरोधशीला शक्ति को क्षीण किया। हम अपने मजदूर भाइयों को सचेत और सावधान कर देना चाहते हैं, यदि वे विश्वक्रांति की हत्या करने वाले इन लोगों की बातों में आयेंगे तो न केवल मजदूरों का वरन् समूचे देश का सर्वनाश हो जाएगा और भारतीय विप्लववाद, यानी क्रांतिवाद, जिसे भारतीय राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ने अपने हृदय के रक्त से पाल–पोस कर इतना बड़ा किया है, असमय में ही काल के गाल में चला जायेगा। हम स्वयं श्रमिक वर्ग को, मजदूर समाज को, सुसंगठित कर रहे हैं। कांग्रेस संस्था ने यह काम अपने हाथ में लिया है। ऐसे समय मजदूरों का यह कर्तव्य है कि वे उनको बहकाकर, उन्हें गोलियों से भुनवाने वाले लोगों के कहने में न आवे।

मजदूर भाइयों से हम कहते हैं कि आप सब कांग्रेस के झण्डे के नीचे संगठित होकर अपना आगे का कार्यक्रम निश्चित कीजिए। आप किसी के बहकावे में आकर व्यर्थ में कानून तोड़ने और हो–हल्ला मचाने के चक्कर में न फँसिये। याद रखिये, जो लोग आपको भड़काते हैं वे आपके जानी दुश्मन हैं। आपको इस प्रकार की नेतागिरी के इच्छुक लोगों से सावधान रहना चाहिए। हम आपकी कठिनाइयों, आपके दुःख–दर्दों, आपकी आवश्यकताओं, आपकी तकलीफों और आपकी भावनाओं को खूब अच्छी तरह समझते हैं। हम आपके साथ मरने–जीने को तैयार हैं। देश में किसान–मजदूर राज्य स्थापित करना ही कांग्रेस का एकमात्र लक्ष्य है। ऐसी अवस्था में आप मजदूर भाइयों को समझ लेना चाहिए कि जो लोग हमेशा आपके खून को खौलाने और आपका खून बहाने की बात करते हैं वे आपके दुश्मन हैं।

(दैनिक प्रताप : 16 जनवरी, 1947)

नवीन जी मानवता के पुजारी। आपने देखा कि उनका जीवन किस प्रकार आरंभ हुआ। अभाव ग्रस्त परिवार में जन्म लेने पर भी मानवता को उन्होंने नहीं छोड़ा। देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए जहाँ उन्होंने ओजस्वीपूर्ण कविताएँ लिखी वहीं मानवता

की स्थापना के लिए लेख लिखे। साप्ताहिक 'प्रताप' के माध्यम से लगातार लेखन कर उन्होंने देश की सामाजिक राजनैतिक समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया 'मानव का भेड़िया बन जाना ही क्या कल्याणकर है?' लेख के द्वारा वे देश ही नहीं संसार के सामने यह प्रश्न रखते हैं –

आइए इस लेख का अंश पढ़े–

मानव का भेड़िया बन जाना क्या कल्याणकर है?

वैदिक ऋषियों के अंतस्तल से प्रार्थना उमड़ी–असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय–मृत्योर्मा अमृतगमय–मुझे असत् से सत् की ओर चरण निक्षेप करने, अंधकार से ज्योति की ओर जाने एवं मृत्यु से अमृत्तव की ओर चलने की प्रेरणा प्रदान करो, हे सर्वेष! किन्तु ऋषियों ने यह भी देखा कि सत् एवं असत को, प्रकाश एवं अंधकार को तथा अमृत्तव एवं मृत्यु के भेद को ह्रदयंगम करने के लिए निर्मल बुद्धि की आवश्यकता है। यदि बुद्धि निर्मल न हो, यदि बुद्धि के ऊपर तमोगुण का आवरण चढ़ा हुआ हो तो वह असत् को सत् तप को ज्योति एवं मृत्यु को अमृत समझ लेगी। गीतकार ने तमोगुणयुक्त बुद्धि के लक्षणों का वर्णन करते हुए ठीक ही कहा है कि अधर्म कर्ममीति या मन्यते तमावृता, सर्वार्थान् विपरीताष्च बुद्धिः सा, पार्थ, तापसी। तमोगुणावृत्त जो बुद्धि अधर्म को धर्म मानती और जो सम्पूर्णतः अर्थों को विपरीत रूप में ही ग्रहण करती है, वह बुद्धि, हे अर्जुन, तामसी है। हमारे वैदिक ऋषियों ने बुद्धि के सत् प्रेरित होने की आवश्यकता को अनुभव कर लिया था, इसीलिए उन्होंने तेजपुंज, कल्मपहर, सविता स्वरूप विश्वाधार से प्रार्थना की–त्त् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्–हम उस सविता देव के श्रेष्ठ तेज की उपासना करते है, वह हमारी बुद्धि को सत् प्राणोदित करे। इस प्रकार जब हमारी बुद्धि तेज–बल युक्त, सात्विक प्रेरणा युक्त, होगी तब वह यथार्थता का दर्शन करा सकेगी और तभी हम सत् की ओर, ज्योति की ओर एवं अमृत्तव की ओर चरणनिक्षेप कर सकेंगे। हमें यह न भूलना चाहिए कि यह वैदिक प्रार्थना, यह वैदिक विचार–परिपाटी, यह उदात्त भावना हमारी पैतृक सम्पत्ति, हमारी थाती है। यदि घनघोर कलुशित वातावरण में भी हम इस मार्ग से च्युत होते है तो हम न केवल आने मानवत्व को वरन् अपने पितरों को भी लजाते है।

आज के इस भयानक, दूषित, दुर्गन्धपूर्ण, बर्बर वातावरण में हमारे लिए यह असंभव–सा हो रहा है कि हम अपनी बुद्धि को, अपने विचारों को, अपनी भावनाओं को निर्मल बनाये रखें। परन्तु यदि हमें गौरव के साथ जीवित रहना है, यदि अपने मानवत्व को हमें अक्षुण्ण बनाये रखना अभीष्ट है, यदि हमें अपने इतिहास पर, अपनी संस्कृति पर हरताल नहीं फेरनी है तो अपने संतुलन को पयथात बनाये रख सकने की असंभव–सी बात को भी संभावना की परिधि में खींच कर ले आना होगा। इस असंभावना को संभव बनाये बिना हम जीवित नहीं रह सकते। निस्संदेह पश्चिमी पंजाब से जो समाचार आ चुके और आ रहे है, वे हमारे मनों को, हमारे ह्रदयों को, हमारी धारणाओं को एवं हमारे प्राणों को विचलित, उद्विग्न एवं क्रोधोन्मत्त कर देते हैं। किन्तु देखना तो यह है कि इस तात्कालिक, क्षणिक आवेश के वशीभूत होकर, अपनी सहस्राब्दियों की संचित सांस्कृतिक परंपरा को तिलांजलि देने से क्या हमारा कल्याण हो सकेगा? तात्विक प्रश्न तो यह है कि मानय का भेड़िया बन जाना ही क्या श्रेयस्कर है?

बोध प्रश्न–2

1) हाँ या नहीं में उत्तर लिखिए :

क) नवीन जी ने मराठी साहित्य का अध्ययन नहीं किया था

ख) बांगला भाषा साहित्य से उनका परिचय था

ग) रूसी तथा अंग्रेजी साहित्य का उन्हें ज्ञान नहीं था

घ) वे पत्र–पत्रिकाओं द्वारा गोखले, विनोबा आदि के लेख पढ़ा करते थे

ड) उनकी आरंभिक रचनाओं पर भक्त कवियों का प्रभाव है

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें –

2. 'आत्मापर्ण कविता का मूल संदेश क्या है?

.....

.....

.....

3. 1920 में चोरी–चौरा कांड के बाद नवीन जी ने कौन सी कविता लिखी?

.....

.....

.....

4. 1943 में कारावास के समय नवीन जी ने किसके लिए कविता लिखी?

.....

.....

.....

5. 17 जनवरी, 1921 को अंग्रेजों ने क्या किया और उसी की प्रतिकृपा में बालकृष्ण जी ने क्या किया?

.....

.....

.....

अभ्यास

1) 'आखिर यह पंतगबाजी क्यों' शीर्षक लेख से लेखक ने भारतीयों की किस कमजोरी की ओर ध्यान दिलाने की कोशिश की?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'के बोले माँ! तुमि अबले' लेख में नवीन जी ने वर्षों बाद घटने वाली घटना को पहचान लिया था।' दस पंक्तियों में इसे स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) नवीन जी ने जाति प्रथा के ठेकेदारों को राष्ट्र का दुश्मन बताया। दस–बारह पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.5 सारांश

बालकृष्ण शर्मा नवीन का जन्म ऐसे समय हुआ जब प्रबुद्ध भारतीयों का दल एक राष्ट्रीय संगठन बना कर देश की आजादी की योजना बना रहा था। युवावस्था में ही उन्हें देश के बड़े–बड़े नेताओं से मिलने का मौका मिला। बचपन की भक्ति भावना राष्ट्रीय भावना में बदल गई। आप नवीन जी के समय की राजनीतिक सामाजिक स्थितियों को बताते हुए यह भी स्पष्ट कर सकते हैं की समसामयिक परिस्थितियों का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा।

नवीन जी अध्ययनशील व्यक्ति थे। देश की कई भाषाओं के साहित्य के साथ उन्होंने विदेशी साहित्य का भी गहन अध्ययन किया था। उनके साहित्य पर हम इनका प्रभाव देख सकते हैं।

नवीन जी की विचारधारा का निरंतर विकास होता रहा। उनकी रचनाओं में भक्ति, राष्ट्रीयता और अंत में मानवतावादी विचारधारा के विकास को हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

11.6 उपयोगी पुस्तकें

संपादन डॉ. लक्ष्मीनारायण दूबे, नवीन ग्रंथ रचनावली, चतुर्थ खंड साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद

11.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1 2, 3, 4, देखें भाग 11.3

बोध प्रश्न –2

1, 2, 3, 4, 5 देखें भाग 11.4

अभ्यास – 1, 2, 4 देखें उपभाग, 11.4.1

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY